श्री नेमिनाथ विधान

माण्डला

मध्य – ॐ
प्रथम वलय – 06
द्वितीय वलय – 12
तृतीय वलय – 24
चतुर्थ वलय – 48
कुल अर्घ्य – 90

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

कृति – **श्री नेमिनाथ विधान**

रचयिता – प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

संस्करण – प्रथम–2021, प्रतियाँ – 1000

संकलन – मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज

सम्पादन – आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी

सहयोग – ब्र. प्रदीप भैय्या

सम्पादन – ज्योति दीदी–9829076085, आस्था दीदी–9660996425

संयोजन – सपना दीदी–9829127533, आरती दीदी–8700876822

सम्पर्क सूत्र – 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर – 9413336017
2. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी – 09810570747
3. पदम जैन, रेवाड़ी – 09416888879
4. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253

पुण्यार्जक :
श्री नेमिनाथ अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर जैन समाज
कल्याणचन्द जैन
त्रिलोकपुर, जिला–बाराबंकी–225208 – मो.: 9453833501

मुद्रक – बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज, SBI के नीचे,
चांदी की टकसाल, जयपुर – मो.: 8114417253
ईमेल : jainbasant02@gmail.com

मूल्य – 30/– रु. मात्र

श्री 1008 नेमिनाथ अतिशय तीर्थ क्षेत्र त्रिलोकपुर (बाराबंकी) का संक्षिप्त परिचय

दोहा - नेमिनाथ जिनराज का, अतिशय तीर्थ महान।
विशद भाव से दर्शकर, पाएँ पुण्य निधान।।

भारत देश उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद मुख्यालय से लगभग 24 किमी. दूर त्रिलोकपुर नगर है। सड़क मार्ग से आने वालों के लिए लखनऊ के कैसरबाग डिपो से बस सेवा उपलब्ध है। जबकि रेल मार्ग से आने वाले यात्रियों के लिए बाराबंकी और बुढ़वल जंक्शन स्टेशनों के बीच में बिन्दौरा स्टेशन उतरकर त्रिलोकपुर जाया जा सकता है। स्टेशन से क्षेत्र की दूरी लगभग 6 किमी0 (पश्चिम) है और स्टेशन से सवारी मिल जाती है।

इस अतिशय क्षेत्र पर सम्वत् 1197 की प्रतिष्ठित 23'' अवगाहना की श्री 1008 भगवान नेमिनाथ की अतिशयकारी सौम्य प्राचीन श्याम मूर्ति विराजमान है। इस मूर्ति के दर्शन मात्र से ही प्रत्येक जीव का कल्याण होता है। कहा है -

परम् ज्योति परमात्मा, नेमिनाथ भगवान।
वंदित जिनके चरण युग, होत जीव कल्याण।।

जनश्रुति के अनुसार भगवान नेमिनाथ की अब से सैकड़ों वर्ष पहले मूर्ति भूमि से प्राप्त हुई थी। अत्यन्त मनमोहन कसौटी पत्थर से निर्मित है। इस चमत्कारिक प्रतिमा के अनेक अतिशय प्रत्यक्ष देखने में आये हैं एक तो यह प्रतिमा तीनों प्रहर अपना रंग बदलती है, दूसरे कहा जाता है कि कभी-कभी रात्रि में देवता आकर इस प्रतिमा का पूजन, वंदन करते हैं और प्रात: यहाह्न पूजन सामग्री चढ़ी हुई मिलती है। रात्रि में वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनि सुनी जाती रही है। अग्नि देव भक्ती करने आते थे। तीसरे एक बार चोरों ने इस चमत्कारिक प्रतिमा को ले जाना चाहा तो वह भी लाख प्रयास करने पर इसे नहीं ले जा सके और न ही वह अपने स्थान से आगे बढ़ सके।

इस क्षेत्र पर एक और श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर भी है तथा श्रावकों के लगभग 15 परिवार हैं। इस क्षेत्र के लिये आवागमन के समुचित साधन उपलब्ध न होने के कारण यह क्षेत्र अत्यन्त पिछड़ा हुआ है और यहाह्न तीर्थ यात्रियों का आवागमन भी कम ही रहता है। अखिल भारतवर्षीय दि0 जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने भी इस तीर्थ क्षेत्र के विकास की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया। सम्पूर्ण दि0 जैन समाज का दायित्व है कि इस अतिशय क्षेत्र के विकास में तन, मन, धन से सहयोग करके इस तीर्थ क्षेत्र को भी एक नई दिशा दें ताकि यहाह्न भी तीर्थ यात्रियों का आवागमन बढ़ सके और सभी को यहाह्न विराजमान भगवान नेमिनाथ की अतिशय युक्त चमत्कारी प्रतिमा के दर्शनों का पुण्य लाभ प्राप्त हो सके।

इस तीर्थ क्षेत्र पर आइये, लेकर सकल समाज।
दर्शन करो प्रभु नेमि के, एक पंथ दो काज।।
धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वाण।
धर्म पंथ साधे बिना, नर तिर्यचं समान।।

त्रिलोकपुर के अतिशयकारी श्री नेमिनाथ भगवान की पूजा

स्थापना

मेरे हृदय कमल में आन, विराजो नेमिनाथ भगवान।
समुद्र विजय के राजदुलारे, शिवादेवी के प्राण से प्यारे।।
जन्में शौरीपुर ग्राम, विराजो नेमिनाथ भगवान।। 1।।
नगर तिलोकपुर में शुभकारी, श्याममूर्ति है मंगलकारी।
सुर नर मुनिवर जिनको ध्याते, इन्द्र नरेन्द्र भी महिमा गाते।।
हम करते हैं आह्वान, विराजो नेमिनाथ भगवान।। 2।।

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र त्रिलोकपुर स्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

भव-भव में भ्रमण किया हमने, पर मुक्त नहीं हो पाये हैं।
अब जन्म मरण मैटो स्वामी, हम नीर चढ़ाने लाये हैं।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।। 1।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम: जलं निर्व. स्वाहा।

आकण्ठ कषायों में फँसकर, हम निज का ध्यान न कर पाए।
अतिशय सुगन्धमय चन्दन शुभ, प्रभु चरण शरण में हम लाए।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।। 2।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम: चन्दनं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्मों का क्षय करके, तुमने अक्षय पद पाया है।
हम भी अक्षय पदवी पाएँ, मन में यह भाव समाया है।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।। 3।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नम: अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हम कमल केतकी पारिजात, के सुमन मनोहर लाए हैं।
मन के विकार तजने सारे, प्रभु शरण आपकी आए हैं।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः पुष्पं निर्व. स्वाहा।

इच्छाएँ मन में हैं इतनी, हम जिनको रोक न पाते हैं।
व्यंजन खाकर के तरह-तरह, मन को संतुष्ट बनाते हैं।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

बिन ज्ञान जीव मिथ्यामति से, जग में फिरता मारा-मारा।
जो भ्रमण करें चारों गति में, न मिटे मोह का अंधियारा।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः दीपं निर्व. स्वाहा।

वसु कर्म जला तप अग्नी में, तुमने शिवफल को पाया है।
हम भी कर्मों का नाश करें, मेरे यह हृदय समाया है।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः धूपं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय निधि को पा करके, तुमने शिव फल को पाया है।
हमने भी शिव पद पाने का, जीवन में लक्ष्य बनाया है।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना, प्रभु चरण शरण में लाए हैं।
शास्वत अनर्घ्य पद पाने को, हे नाथ! चरण में आये हैं।।
पावन त्रिलोकपुर तीर्थ विशद, श्री नेमिनाथ को ध्याते हैं।
मन-वचन-काय त्रय योगों से, श्री जिनकी महिमा गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

कार्तिक सुदि षष्ठी आए, प्रभु गर्भ कल्याणक पाए।
सुर रत्न वृष्टि करवाए, हम महिमा गाने आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ल षष्ठ्यां गर्भमंगल प्राप्ताय त्रिलोकपुर स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठवी आए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए।
सुर मेरु पेन्हवन कराए, हम महिमा गाने आए।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां जन्म कल्याण प्राप्ताय त्रिलोकपुर स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी आई, प्रभु मुनिवर दीक्षा पाई।
प्रभु जी संयम अपनाए, हम महिमा गाने आए।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ल षष्ठ्यां तपो मंगल प्राप्ताय त्रिलोकपुर स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम आए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
प्रभु दिव्य ध्वनि सुनाए, हम महिमा गाने आए।।4।।

ॐ ह्रीं अश्विन शुक्ल प्रतिपदा केवल ज्ञान प्राप्ताय त्रिलोकपुर स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सातें अषाढ़ की आए, प्रभु शिवपुर धाम बनाए।
शिव ऊर्जयन्त से पाए, हम महिमा गाने आए।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्ताय त्रिलोकपुर स्थित अतिशयकारी श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - समुद्र विजय के लाडले, शिवादेवी के लाल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हैं जयमाल।।

भरत क्षेत्र उत्तर प्रदेश में, शौरीपुर शुभ धाम कहा।
राजा समुद्र विजय की रानी, शिवादेवी शुभ नाम रहा।।
अपराजित से चयकर आये, गर्भागम प्रभु ने पाया।
सोलह सपने देखे माँ ने, फल भूपति ने बतलाया।।1।।
जन्मोत्सव देवों ने मिलकर, अनहद बाजे बजवाए।
पाण्डुक शिला न्हवन कराने, इन्द्र स्वर्ग से सौ आए।।

शंख चिन्ह शुभ देख इन्द्र ने, नेमिनाथ शुभ नाम दिया।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्रों ने तब, प्रभु का जय-जयकार किया।। 2।।
गुजरात प्रान्त में जूनागढ़, प्रभु जी बरात लेकर जाते।
बाड़े में बंद पशू देखे, करुणा प्रभु मन में प्रगटाते।।
सुनकर पुकार उन पशुओं की, वैराग्य हृदय प्रभु जी धारे।
गिरनार पे जा संयम धारा, तब देव किए शुभ जयकारे।। 3।।
एकाग्र ध्यान प्रभु जी करके, केवल्य ज्ञान प्रगटाते हैं।
फिर ऊर्जयन्त से ही स्वामी, निज मुक्ति रमा को पाते हैं।।
उत्तर प्रदेश बाराबंकी के, पास तिलोकपुर कहलाए।
भूमी से श्याम मूर्ति प्रगटी, अनुपम अतिशय जो दिखलाए।।4।।
कई देव भक्ति करने आए, जो गीत वाद्य बजवाते थे।
प्रभु चरणों की भक्ती करके, फल दिव्य चढ़ाकर जाते थे।।
गंधोदक प्रभु का पाने से, सब रोग शोक नश जाते हैं।
हो दीन दरिद्री धन पाते, विद्यार्थी विद्या पाते हैं।। 5।।
प्रभु चरण आपके आकर जो, भक्ति के पुष्प चढ़ाते हैं।
पूजा विधान आरति करते, वे मन वांछित फल पाते हैं।।
हम भक्त आपके चरणों में, प्रभु भक्ती कर हर्षाए हैं।
सुख शांति विशद हो जीवन में, यह अर्ज सुनाने आए हैं।। 6।।

दोहा - पूरी हो मम कामना, हे त्रिभुवन के ईश!
तीन योग से तव चरण, झुका रहे हैं शीश।।

ॐ ह्रीं अतिशयक्षेत्र त्रिलोकपुर स्थित मनोकामनापूर्णकर्ता श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - नहीं देखने को मिले, जल में जैसे आग।
विशद रोग में भी धरें, श्री जिन परम विराग।।

इत्याशीर्वाद

भजन

तर्ज - आओ बच्चों तुम्हे.....

आओ सब मिल करें अर्चना, नेमिनाथ भगवान की।
श्री जिन की अर्चा होती है, भक्तों के कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2 ।। टेक ।।
नगर तिलोकपुर जिन मंदिर में, नेमिनाथ शोभा पाएँ-2।
दूर-दूर से चलके श्रावक, जिन अर्चा करने आएँ-2।।
श्री जिन की भक्ती है शुभ, वीतराग विज्ञान की।
श्री जिन की भक्ती है पावन, भक्तों के कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2 ।। 1 ।।
श्याम रंग की प्रतिमा अनुपम, अतिशय कई दिखाती है।। 1 ।।
वीतराग मुद्राश्री जिनकी, जन-जन के मन भाती है-2
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, मुद्रा है शुभ ध्यान की।
श्री जिन की भक्ती है पावन, भक्तों के कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2 ।। 2 ।।
भक्ति भाव से श्रावक आके, प्रभु का न्हवन कराते हैं-2
पूजा आरती करें भाव से, चालीसा भी गाते हैं-2
श्री जिनवर की रही अर्चना, भक्तों के सम्मान की।
श्री जिन की भक्ती है पावन, भक्तों के कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2 ।। 3 ।।
गर्भ कल्याणक के अवसर पर, मेला लगता है भारी-1
जिन भक्ती करते हैं मिलकर, जिनवर की मंगलकारी-2
मोक्ष कल्याणक पर भक्ती हो, प्रभु जी के निर्वाण की।
श्री जिन की भक्ती है पावन, भक्तों के कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2 ।। 4 ।।
महिमा सुनकर के श्री जिनकी, आज यहाँ हम आए हैं-1
वीतराग मुद्रा श्री जिनकी, जिनके हम दर्शन पाए हैं-2 ।।
'विशद' भाव से अर्चा करते, जिनवर कृपा निधान की।
श्री जिन की भक्ती है पावन, भक्तों के कल्याण की।।
वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्-2 ।। 5 ।।

भजन

तर्ज – देख तेरे संसार की हालत.....

आओ सब मिल दीप जलाओ, करो प्रभु गुणगान।
कि बैठे नेमिनाथ भगवान-2 ।।टेक ।।

समुद्र विजय के राजदुलारे, शिवादेवी की आँखों के तारे।
यदुवंशी तीर्थेश हमारे, सभी बोलते जय-जयकारे।।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, हुआ सुमंगलगान।
कि बैठे नेमिनाथ भगवान-2।।1 ।।

जूनागढ़ की राजकुमारी, राजुल नाम रहा शुभकारी।
ले बरात पहुँचे त्रिपुरारी, पशू देख के करुणाकारी।।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, किए स्वयं कल्याण।
कि बैठे नेमिनाथ भगवान-2 ।।2 ।।

ऊर्जयन्त गिरि पे जो जाते, आप स्वयं ही दीक्षा पाते।
राजुल को दीक्षा दिलवाते, निज आतम का ध्यान लगाते।।
कर्म घातियाँ नाशे प्रभु जी, पाए केवल ज्ञान।
कि बैठे नेमिनाथ भगवान-2 ।।3 ।।

ऊर्जयन्त से मुक्ती पाए, सि(शिला पर धाम बनाए।
यह त्रिलोकपुर नगर कहाए, प्रभु के दर्शन हमने पाए।।
मनमोहक जिनवर की प्रतिमा है, अति महिमावान।
कि बैठे नेमिनाथ भगवान-2।।4 ।।

देव यहाँ भक्ती को आते, श्रेष्ठ दिव्य फल चढ़ा के जाते।
मनोभावना जो भी भाते, इच्छित फल वे प्राणी पाते।।
''विशद'' भावना यही हमारी, हो जग का कल्याण।
कि बैठे नेमिनाथ भगवान-2।।5 ।।

भजन

तर्ज – मेरे देश की धारती.....

श्री नेमिनाथ की भक्ति करके, इच्छित फल पा जाएँ।
श्री नेमिनाथ की भक्ति - 2 ।।टेक ।।

नगर तिलोकपुर जिन मंदिर में, यात्री दूर से आते हैं।
भक्तिभाव से दर्शन करके, प्रभु का न्हवन कराते हैं
करें परिक्रमा वेदी की वे, पूजा पाठ रचाते हैं
भक्ती करें जो तीन योग से, इच्छित फल वे पाएँ
नेमिनाथ की भक्ति - 2 ।।1 ।।

करें आरती भक्ति भाव से, चालीसा भी गाते हैं।
पूजा और विधान रचाते, पद में शीश झुकाते हैं
मनोकामना लेकर के जो, प्रभु चरणों में आते हैं
इच्छा उनकी पूरी होती, वे मन में हर्षाएँ
नेमिनाथ की भक्ति - 2 ।।2 ।।

जो आरोग्य की इच्छा करते, वे निरोग हो जाते हैं।
धन की इच्छा करने वाले, इच्छित फल को पाते हैं।।
विद्यार्थी विद्या पा करके, शुभ आजीविका पाते हैं।
''विशद'' मोक्ष के इच्छुक प्राणी, निज में चित्त लगाएँ।।
नेमिनाथ की भक्ति - 2 ।।3 ।।

भजन

तर्ज - जीवन है पानी की बूँद.....

श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे!
जो तिलोकपुर में, भूमी से प्रगटाए रे! ।।टेक ।।
श्याम रंग प्रतिमा गाई, महिमा जिसकी अतिशायी।
वीतरागता दर्शाए, दर्शन कर मन हर्षाए।।
जिनवर का दर्शन ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, सब पाप नशाए रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।1 ।।
देव भी दर्शन को आते, फल अर्पण करके जाते
ऐसा कहते लोग यहाँ, अतिशय प्रभु का रहा महाँ
जिनवर की पूजा ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, भव ताप नशाए रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।2 ।।
श्रावक जो भी आते हैं, पूजा पाठ रचाते हैं।
चालीसा भी गाते हैं, मन वांछित फल पाते हैं।।
अर्चा कर जिनकी ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, सौभाग्य जगाए रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।3 ।।
विद्यार्थी विद्या पावें, पुत्रार्थी निज सुत पावें।
सेवार्थी सेवा पावें, दीन दरिद्री धन पावें।।
सबकी इच्छाएँ ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, पूरी हो जाएँ रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।4 ।।
प्रभु आप त्रिपुरारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
आज हमारी बारी है, मर्जी प्रभु तुम्हारी है।।
हम तो चरणों में ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, प्रभु विनती लाए रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।5 ।।
''विशद'' भाव मन में आये, भजन आपका यह गाए।
श्र(ा सुमन चढ़ाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।
फिर से दर्शन को ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, मन ललचाए रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।6 ।।
बाराबंकी पास कहा, वहाँ का भी इतिहास रहा।
भरत सागराचार्य गुरु, वाणी जिनकी हुई शुरू।।
गुरुवर के चरणों ओऽऽऽ हो ऽऽऽ-2, जग माथ झुकाए रे!
श्री नेमिनाथ जिनराज, अतिशय दिखलाए रे! ..... ।।7 ।।

श्री नेमिनाथ छयालीसा

दोहा- भूमी से प्रगटे प्रभू, नेमिनाथ भगवान।
अतिशय क्षेत्र तिलोकपुर, का करते गुणगान।।

दोहा- अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
छयालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप।।

(चौपाई छन्द)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी!।। 1 ।।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए।। 2 ।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु को मानो।। 3 ।।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवादेवी के राज दुलारे।। 4 ।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।। 5 ।।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर नर पशु भारी हर्षाए।। 6 ।।
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।। 7 ।।
शंख चिन्ह पग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया।। 8 ।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।। 9 ।।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी।। 10 ।।
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।। 11 ।।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया।। 12 ।।
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।। 13 ।।
जूनागढ़ की राजकुमारी, राम रहा राजुल सुकुमारी।। 14 ।।
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर-नारी।। 15 ।।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए।। 16 ।।
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।। 17 ।।
नेमिनाथ दुल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए।। 18 ।।
बाड़े में जब पशू रँभाए, करुणा से नेमी भर आए।। 19 ।।
पूँछा क्यों ये पशू बँधाएँ, श्रीकृष्ण यह बात सुनाए।। 20 ।।
इन पशुओं का माँस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।। 21 ।।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया।। 22 ।।
उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।। 23 ।।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन में होकर के अविकारी।। 24 ।।
कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।। 25 ।।

श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभु जी संयम को अपनाए।। 26 ।।
एक सहस नृप दीक्षा धरे, द्वारावति में लिए अहारे।। 27 ।।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त ने ये अवशर पाया।। 28 ।।
अश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवल ज्ञान पाए जग नामी।। 29 ।।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभु की जय जयकार लगाए।। 30 ।।
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।। 31 ।।
चित्रा शुभ नचत्र बताया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया।। 32 ।।
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।। 33 ।।
)षी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए।। 34 ।।
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।। 35 ।।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी।। 36 ।।
ग्यारह सौ विक्रिया के धारी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।। 37 ।।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए।। 38 ।।
अषाढ़ शुक्ला साते जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।। 39 ।।
उर्जयन्त से शिव पद पाए 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ।। 40 ।।
है तिलोकपुर क्षेत्र निराला, जीवों का मन हरने वाला।। 41 ।।
भूमि से प्रतिमा प्रगटी प्यारी, नेमिनाथ जी मंगलकारी।। 42 ।।
देव भी अर्चा करने आए, फल देवों ने कई चढ़ाए।। 43 ।।
जिनाभिषेक पूजन शुभकारी, छयालीसा गाते मनहारी।। 44 ।।
भक्ती से जो आरती गाते, मन वांछित फल वे पा जाते।। 45 ।।
हमने यह सौभाग्य जगाया, प्रभू आपका दर्शन पाया।। 46 ।।

सोरठा- चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो।।
शांती में हो वास, रोग शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

जाप - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री नेमिनाथ स्तुति

द्वार आपके हम खड़े, नेमिनाथ भगवान।
कृपा आपकी चाहते, करते हम गुणगान।।

(शभू छन्द)

नेमिनाथ जिन के चरणों में, झुकता है यह जग सारा।
कामबली पर विजय प्राप्त की, जिससे सारा जग हारा।।
हे प्रभो! आप करुणा कर हो, हमको करुणा का दान करो।
यह भक्त पड़ा है चरणों में, इस पर भी कृपा प्रदान करो।।१।।
तुम पार हुए भव सागर से, मैं भव सागर में भटक रहा।
तुमने मुक्ति को पाया है, मैं जग वैभव में अटक रहा।।
हे नेमिनाथ करुणा नन्दन, करुणा की धारा बरसाओ।
जो भूले भटके राही हैं, उनको सद् मार्ग दिखा जाओ।।२।।
सद्धर्म आत्मा का भूषण, जो धारण उसको करता है।
वह जगत लक्ष्मी को तजकर, शुभ मुक्ति वधु को वरता है।।
तुमने राजुल का त्याग किया, तो शिव रमणी को पाया है।
यह जान प्रभू मेरे मन में, शुभ भाव उमड़ कर आया है।।३।।
रिश्ते नाते सब धोखा हैं, बस नाता सत्य तुम्हारा है।
तुमसे अब मेरा नाता हो, यह पावन लक्ष्य हमारा है।।
संसार असार रहा प्रभु यह, हम क्या जाने तुम हो ज्ञाता।
भव पार करो हमको भगवन्, हे नाथ! आप जग के त्राता।।४।।
तुम शिवादेवि के हो नन्दन, तुम तो शिवपुर के वासी हो।
तुम विश्व विभव को पाये हो, प्रभु सर्व कर्म के नाशी हो।।
प्रभु शांति सुधामृत के स्वामी, तुमने शांति को पाया है।
अब 'विशद' शांति को पाने का, मैंने शुभ भाव बनाया है।।५।।

दोहा - गरिमा जिनकी है आगम, महिमा का ना पार।
जिनकी अर्चा कर मिलें, मोक्ष महल द्वार।।

।। इत्याशीर्वाद ।। पुष्पांजलिं ।।

श्री नेमिनाथ पूजा (शनिवार)

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, बलदेव नारायण ने गाई।
सौधर्म इन्द्र की भी शक्ती, जिनके चरणों आ शर्माई।।
जो राग आग की ज्वाला के, जलते शोलों को छोड़ चले।
पशुओं का कृन्दन देख नेमि, रथ ऊर्जयन्त को मोड़ चले।।
दोहा- महिमा क्या वैराग्य की, करने आये ब्याह।
साथ वधू को ले चले, वन की पकड़ी राह।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(सुमति छन्द)

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नहीं जाए, प्रभु मैटो द्वेष महा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।

तन धन परिजन जो हैं, सब नश्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

इस क्षुधा रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
प्रभु मोह बली ने ही, निज की सुधि विसराई।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की आंधी से, ये तन गृह बिखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांती धारा दे रहें, जागे मम उर हर्ष।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा - पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें अषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - आखों में आँसू भरे, सुनकर जिनके हाल।
वैरागी प्रभु नेमि की, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज-करम के खेल कैसे हैं.....

करम के खेल कैसे हैं, नहीं हम जान पाते हैं।
मिले संसार से मुक्ती, अतः पूजा रचाते हैं।।टेक।।

स्वर्ग अपराजित से चयकर, गर्भ में माँ के प्रभु आए।
शौरीपुर में प्रभू जन्मे, हर्ष त्रय लोक में छाए।।
इन्द्र मेरू पे ले जाके, न्हवन प्रभु का कराते हैं।
मिले संसार.....।।1।।

जन्म से आपके जग में, धन्य शुभ हो गया यदुकुल।
नेमि जी दूल्हा बनकर के, ब्याहने को चले राजुल।।
बँधे बाड़े में हो व्याकुल, पशू दुख से रंभाँते हैं।
मिले संसार.....।।2।।

देख पशुओं की पीड़ा को, नेमि करुणा से भर आते।
धार वैराग्य अन्तर में, सुगिरि गिरनार को जाते।।
बनी दुल्हन हुई व्याकुल, नेमि जब वन को जाते हैं।
मिले संसार.....।।3।।

गई समझाने को राजुल, नाथ! वन को नहीं जाओ।
प्रीति नौ भव की तोड़ी क्यों, राज हमको ये बतलाओ।।
सार संसार में नाहीं, अतः संयम को पाते हैं।
मिले संसार.....।।4।।

कर्म घाती प्रभू नाशे, ज्ञान केवल जगाया है।
सुगिरि गिरनार से प्रभु ने, सुपद निर्वाण पाया है।
जिनालय में प्रभू सोहें 'विशद' महिमा दिखाते हैं।
मिले संसार.....।।5।।

दोहा - राज तजा राजुल तजी, त्यागा घर परिवार।
जीवों पर करुणा किए, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - अर्चा करते आपकी, नेमिनाथ भगवान।
यही भावना है विशद, सफल होय सब काज।।

।। इत्याशीर्वाद।।

प्रथम वलयः

दोहा - षड् गुण गाए जीव के, रहें हमेशा साथ।
कर्म नाश गुण प्राप्तकर, बनें मुक्ति के नाथ।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(सखी-छन्द)

है जीव स्वयंभू ज्ञानी, संसारी भी विज्ञानी।
अस्तित्त्व वान अविनाशी, है शास्वत शिव का वासी।।1।।

ॐ ह्रीं अस्तित्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिव शुद्ध बुद्ध अनगारी, निज तन प्रमाण अविकारी।
जो चिदानन्द अविकारी, वस्तुत्व सुगुण का धारी।।2।।

ॐ ह्रीं वस्तुत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

न देव भृत्य न स्वामी, न बन्ध मुक्त शिवगामी।
द्रव्यत्व सुगुण अविनाशी, निज में निज गुण की राशी।।3।।

ॐ ह्रीं द्रव्यत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ विषय ज्ञान का गाया, ज्ञानी में ज्ञान समाया।
जो है प्रमेय शुभकारी, अनुपम अनन्त शिवकारी।।4।।

ॐ ह्रीं प्रमेयत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो रहे लघु ना भारी, वह अगुरुलघु अविकारी।
गुण अगुरुलघुत्व कहाए, हर जीव सुगुण यह पाए।।5।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसमें प्रदेश गुण पाया, जो संख्यातीत बताया।
जो रहे अलौकिक भारी, है चेतन की बलिहारी।।6।।

ॐ ह्रीं प्रदेशत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निस्पृह कलंक अनरूपी, चैतन्य ज्योति चिद्रूपी।
चैतन्य मूर्ति अविकारी, चेतन गुण है मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं षट् गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - द्वादश तप जिन धारकर, किए कर्म का अन्त।
कर्म घातिया नाश जिन, बने आप अर्हन्त।।

।। द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(चाल छन्द)

प्रभु अनशन तप को पावें, फिर अपने कर्म नशावें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कर ऊनोदर भाई, पावें जग में प्रभुताई।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते मुनि रस के त्यागी, निज आतम के अनुरागी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।3।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विविक्त शैयाशन पावें, तपकर वे कर्म खिपावें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।4।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि काय क्लेश धर ज्ञानी, तप धारें जग कल्याणी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।5।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान जो पावें, वे कर्म जयी कहलावें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।6।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो प्रायश्चित तप करते, वे अपने पातक हरते।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैयावृत्ती तप धारी, होते हैं करुणाकारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।8।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ती तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विनय सुतप को धारें, वे मुक्ती मार्ग सम्हारें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।9।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, मुनि जग के करुणाकारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पाते, वे अपने कर्म नशाते।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ध्यान करें अविकारी, मुनिवर जो हैं अनगारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा - श्री जिनेन्द्र इस लोक में, रहे परिग्रह हीन।
निज गुण में विचरण करें, रहते स्वातम लीन।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

।। चतुर्विंशति परिग्रह रहित जिन।।

(सखी-छन्द)

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें।
जो हैं मिथ्यात्व निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी।
जो क्रोध कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।2।।

ॐ ह्रीं क्रोध परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी।
हैं मान कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।3।।

ॐ ह्रीं मान परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वे नर नारी।
हैं माया कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।4।।

ॐ ह्रीं माया परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी।
हैं लोभ कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।5।।

ॐ ह्रीं लोभ परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(ताटंक छन्द)

'हास्य' कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
शंकित होते हैं औरों से, निज संसार बढ़ाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'रती' उदय में जिनके आवे, वे सब राग बढ़ाते हैं।
राग आग में जलकर प्राणी, दुर्गति पंथ सजाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं रति नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अरति' भाव मन में आने से, अप्रीति का भाव जगे।
बैर भाव के कारण मानव, कर्माश्रव में शीघ्र लगे।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अरति नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट देखकर, मन में 'शोक' जगाते हैं।
नित कषाय में जलने वाले, कर्म बन्ध ही पाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तू, मन में भय उपजाते हैं।
भय के कारण व्याकुल होकर, शांत नहीं रह पाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 10।।

ॐ ह्रीं भय नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्व-पर के गुण दोष देखकर, जो ग्लानी उपजाते हैं।
रहे कषाय 'जुगुप्सा' धारी, दुर्गति में ही जाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 11।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुरुष जन्य जो भाव प्राप्त कर, रमने को खोजें नारी।
'पुरुष वेद' के धारी हैं वे, व्याकुल रहते हैं भारी।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 12।।

ॐ ह्रीं पुरुष वेद कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री जन्य भाव पाकर के, पुरुषों में जो रमण करें।
'स्त्री वेद' प्राप्त करके वे, दुर्गति में ही गमन करें।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 13।।

ॐ ह्रीं स्त्री वेद कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रखते हैं वह 'षण्ड' कहे।
करते हैं उत्पात विषय गत, भारी जो उद्दण्ड रहे।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 14।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छन्द भुजंगप्रयात

खेती के मन में जो भाव जगाएँ, 'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाएँ।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 15।।

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोठी महल बंगला जो बनावें, 'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 16।।

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाँदी की मन में जो आशा जगावें, 'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 17।।

ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने के आभूषण आदी मंगावें, 'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 18।।

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें, वे 'धन परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 19।।

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर के धान्य जो कोठे भरावें, वे 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 20।।

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा के हेतू जो नौकर बुलावें, वे 'दास परिग्रह ' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 21।।

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री से अपनी जो सेवा करावें, वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 22।।

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपड़े जो नये-नये कइ लेकर के आवें, वे 'कुप्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 23।।

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाड़े या बर्तन से कोठे भरावें, वे 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 24।।

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - परिग्रह चौबिस का प्रभू, करके पूर्ण विनाश।
शिवपथ के राही बने, कीन्हे शिवपुर वास।। 25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा - अष्ट ऋद्धियाँ के विशद, भेद हैं अड़तालीस।
पुष्पांजलि कर पूजते, ऋद्धी धार ऋशीष।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अड़तालिस ऋद्धि के अर्घ्य

।। केसरी छन्द।।

केवल ज्ञान ऋद्धि जो पावें, लोकालोक प्रकाश करावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मनः पर्यय ऋजुमति के धारी, जग में गाए मंगलकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, होते वीतराग विज्ञानी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं विपुलमति मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

देश परम सर्वौषधि भाई, ऋद्धी गाई है सुखदायी।
ऋद्धी पावन पूज रचाते, ऋषि भी जिनकी महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं देशावध्यादि बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोष्ठ ऋद्धि के धारी जानो, साधू ज्ञान जगाएँ मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धि पदानुसारी ज्ञानी, पावें जग जन की कल्याणी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बीज बुद्धि ऋद्धी प्रगटावें, पूर्ण शास्त्र का ज्ञान करावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि संभिन्न श्रोतृधर गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोतृत्व ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूर स्पर्श ऋद्धी प्रगटावें, सूर्य चन्द को भी छू पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद वस्तु का ऋषिवर पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं दूरास्वाद ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूर घ्राण ऋद्धीधर जानो, दूर गंध को पावें मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूरावलोकन ऋद्धी धारी, होते दूरावलोकन कारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूर श्रवण ऋद्धी प्रगटावें, दूर शब्द को भी सुन पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, ज्ञान जगाते जग कल्याणी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।14।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह पूर्व ऋद्धि जो पावें, भाव अर्थ सबको समझावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।15।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि प्रत्येक बुद्धिधर गाए, जो जग को सन्मार्ग दिखाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।16।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो वादित्व ऋद्धि प्रगटावें, परवादी को शीघ्र हरावें
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।17।।

ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अग्नि पुष्प जल तन्तू जानो, श्रेष्ठ पत्र ऋद्धी धर मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।18।।

ॐ ह्रीं अग्न्यादि चारण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जंघाचारण ऋद्धी पाते, गगन गमन की शक्ति जगाते।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।19।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गगन गमन ऋद्धी के धारी, चारण ऋद्धी धर अनगारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।20।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अणिमा आदि विक्रिया धारी, ऋद्धी धर होते अविकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।21।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तर्धान विक्रिया पावें, ऋद्धी धारी संत कहावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।22।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उग्र सुतप ऋद्धी प्रगटाते, उनकी सुर नर महिमा गाते।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।23।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दीप्ति सुतप ऋद्धी धर जानो, तन में कांति जगाते मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विशद तप्त ऋद्धी प्रगटावें, भोजन क्षण में पूर्ण पचावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।25।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु महातप ऋद्धी धारी, कर्म निर्जरा करते भारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।26।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धि घोर तप पाने वाले, साधू जग में रहे निराले।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।27।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घोर पराक्रम ऋद्धी धारी, होते हैं तप वृद्धीकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।28।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधू घोर ब्रह्मचर्य पावें, शील व्रतों के धारि कहावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।29।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।। पाइता छन्द ।।

मन बल ऋद्धी के धारी, सद् ज्ञान जगावें भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।30।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बल वचन ऋद्धि प्रगटाते, वे सकल शास्त्र पढ़ जाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।31।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बल काय ऋद्धि जो पावें, वे अतिशय शक्ति बढ़ावें ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।32।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि आमर्षौषधि धारी, होते पर रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।33।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धि जगावें, जो क्ष्वेल से रोग नशावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।34।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धी जल्लौषधि पावें, जल्ल छूते रुज नश जावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।35।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि मल्लौषधि के धारी, का मल हो रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।36।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि विडौषधी धर गाए, करुणा की धार बहाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।37।।

ॐ ह्रीं विडौषधी ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधि ऋद्धी धारी, की पद रज रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।38।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आश्यार्विष ऋद्धि जगाते, ना क्रोध दृष्टि दिखलाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।39।।

ॐ ह्रीं आश्यार्विष ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दृष्टी विष औषधि धारी, होते हैं करुणा कारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।40।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विष औषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आशीर्विष दृष्टि जगातें, न क्रोध दृष्टि दिखलाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।41।।

ॐ ह्रीं आशीर्विश ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दृष्टी विष ऋद्धि के धारी, न दृष्टि करें भय कारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।42।।

ॐ ह्रीं दृष्टीर्विश ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि क्षीर स्रावी कहलाते, नीरस जो रस मय पाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।43।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मधु स्रावी ऋद्धी धारी, के अन्य हो मधु सम भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।44।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृत स्रावी ऋद्धि जगावें, घृत सम भोजन को पावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।45।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि अमृत स्रावी गाए, अमृत सम अन्न को पाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।46।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षीण ऋद्धि प्रगटावें, ना क्षीण भोज हो पावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।47।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षीण महालय पाएँ, लघु जगह में कटक समाएँ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।48।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि सर्व ऋद्धियाँ पावें, जो तप धर ध्यान लगावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।49।।

ॐ ह्रीं सकलऋद्धिसम्पन्न श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अड़तालीश हजार अरु, उन्तिस लक्ष प्रमाण।
चौदह सौ बावन गणी, पूज रहे धरध्यान।।50।।

ॐ ह्रीं वर्तमान-चतुर्विंशतितीर्थंकरसभासंस्थायि-'चतुर्दशशतद्विपंचाशतगणधर एकोनत्रिंशल्लक्षाष्ट-चत्त्वारिंशत् सहस्रप्रमितमुनीन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा - भव्य जीव जिन वन्दना, कर हों माला माल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

।। तोटक छन्द ।।

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जस समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन।।
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हें महान।
सुर जन्म कल्याणक किये आन, है शंख चिह्न जिनका प्रधान।।
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान।।
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़।।
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान।।
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुन नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए शिव निवास।।

दोहा - भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिवरानी चले, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा - अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
चालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप।।

(चौपाई छन्द)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी!।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु का मानो।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवादेवी के राज दुलारे।। 1।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर नर पशु भारी हर्षाए।।
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।
शंख चिन्ह पग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया।। 2।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी।।
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया।। 3।।
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।
जूनागढ़ की राजकुमारी, नाम रहा राजुल सुकुमारी।।
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर-नारी।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए।। 4।।
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।
नेमिनाथ दुल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए।।
बाड़े में जब पशू रँभाए, करुणा से नेमी भर आए।
पूँछा क्यों ये पशू बँधाएँ, श्री कृष्ण यह बात सुनाए।। 5।।
इन पशुओं का माँस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया।।
उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन से होकर के अविकारी।। 6।।

कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभुजी संयम को अपनाए।।
एक सहस नृप दीक्षा धरे, द्वारावति में लिए अहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त ने ये अवशर पाया।। 7।।
अश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवलज्ञान पाए जग नामी।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभू की जय जयकार लगाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।
चित्रा शुभ नक्षत्र बताया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया।। 8।।
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।
ऋषी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए।।
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी।। 9।।
ग्यारह सौ विक्रिया के धरी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए।।
अषाढ़ शुक्ला आठे जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।
उर्जयन्त से शिव पद पाए 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ।। 10।।

सोरठा - चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो।।
शांती में हो वास, रोग शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

जाप - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते गुरुग्राम नगरे, अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2543 वि. सं. 2074 भादो मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी सोमवार वासरे श्री नेमिनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री नेमीनाथ की आरती

तर्ज–भक्ति बेकरार है...

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।। टेक।।

शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है.....
पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।
नेमिनाथ दरबार है.....

एक सौ सत्तर तीर्थंकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश।।
क्षेत्र विदेहों में तीर्थंकर, कम से कम रहते हैं बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हम अपना शीश।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप प्रतिकाले सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित सर्व तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं नि.स्व.।

परम्परागत आचार्यों का सामूहिक अर्घ्य

आदि सागराचार्य गुरु श्री, महावीर कीर्ति जी ऋषिराज।
विमल सिन्धु सन्मति सागर, गुरु भरत सिन्धु पद पूजें आज।।
गणाचार्य श्री विराग सिन्धु के, 'विशद' करें चरणों अर्चन।
पूज्य सर्व आचार्यों के पद, मेरा बारम्बार नमन।।

ॐ ह्रीं गुरु परम्पराचार्य सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी की आरती

ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमने अनुचर।। ॐ जय ।। टेक।।
ग्राम कुपी में जन्म लिया माँ, इन्दर उर आये-स्वामी इन्दर...।
धन्य पिताश्री नाथूराम जी-2, श्रेष्ठ पुत्र पाये।। ॐ जय...
तीर्थ वन्दना करने हेतु, सम्मेद शिखर आए-स्वामी सम्मेद...।
विमल सिन्धु के दर्शन करके-2, व्रत प्रतिमा पाए।। ॐ जय...
विजय प्राप्त करने कर्मों पर, परिजन तज आए-स्वामी परिजन...।
सिद्ध क्षेत्र श्रेयांश गिरि पर-2, ऐलक पद पाए।। ॐ जय...
विराग सिन्धु गुरुवर से, मुनिव्रत ग्रहण किए-स्वामी मुनि...।
द्रोणागिरि में दीक्षा लेकर-2, निज में लीन हुए।। ॐ जय...
भरत सिन्धु गुरुवर ने, पद आचार्य दिया-स्वामी पद...।
मालपुरा नगरी ने-2, पावन श्रेय लिया।। ॐ जय...
पूजा विधान अनेको लिखकर, प्रभु के गुण गाए-स्वामी प्रभु...।
विशद आरती करके हमने-2, गुरु के गुण गाए।। ॐ जय...
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमरे अनुचर।। ॐ जय.....

(रचयिता - मुनि विशाल सागर जी)